

अनन्य भाव से परमात्मा के दिव्य स्वरूप का ध्यान करें

पूर्ण खिला हुआ चंद्रमा पूर्णमासी में कितने दिनों तक रहता है? सिर्फ एक घड़ी, दूसरी घड़ी से फिर उसकी अमावस की ओर यात्रा शुरू हो जाती है। फिर अमावस में वो कितना समय रहता है? एक घड़ी, फिर पुनः उसकी पूर्णमासी की ओर यात्रा शुरू हो जाती है। ठीक इसी प्रकार आत्माओं की भी सम्पूर्ण अवस्था सतयुग में होती है। सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, श्रेष्ठ गति को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन उस गति के बाद धीरे... धीरे... उसकी भी अमावस की तरफ यात्रा प्रारंभ हो जाती है अर्थात् कलियुग तक। फिर वहां पुरुषार्थ करते हुए पुनः आत्मा बनी यात्रा अमरलोक की तरफ प्रारंभ हो जाती है। ये

परिवर्तन नित्य चलता ही रहता है। अगर हम ध्यान से देखेंगे तो परिवर्तन स्पष्ट नजर आता है। हर घड़ी, हर व्यक्ति के अंदर परिवर्तन हो रहा है। इस शरीर में भी परिवर्तन हो रहा है तो हमारी मनोवृत्तियों में भी परिवर्तन हो रहा है तो हमारी भावनाओं में भी परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तन कहां नहीं हो रहा है! इसलिए कहा गया कि जब वो पुण्य क्षीण होने लगता है अर्थात् समाप्त होने लगता है तो पुनः मृत्युलोक में आ जाते हैं। इस प्रकार जन्म-मृत्यु के चक्र में आते-जाते रहते हैं। कुदरत के नियम के अनुसार उसको चलना ही है। उसमें भी जो अनन्य भाव से मेरे दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए निरंतर मुझे निःस्वार्थ भाव से याद करते हैं, उनकी आवश्यकताओं को मैं पूरा करता हूँ। ये भगवान का वायदा है।

आत्मविश्वास

पृष्ठ 6 का शेष भाग

- आत्मविश्वासी सदा अपने को प्राप्ति सम्पन्न अनुभव करते।
- माया के किसी भी प्रकार के वार से घबरायेंगे नहीं।
- उनकी निरंतर और एकरस उन्नति होगी।
- उनकी योग्यतायें निखरेंगी।
- मानसिक शक्तियों का विकास होगा।
- चमत्कारिक कार्य करने की क्षमता जागृत होगी।
- वह दूसरों को भी अपने बल की छाया में तन-मन की शांति और शक्ति की अनुभूति करायेगा।
- आत्मविश्वास से मन मजबूत और बुद्धि विशाल होती।
- असंभव कार्य भी संभव हो जाते।
- सहज ही परिवर्तन का कार्य कर सकते हैं।

आत्मविश्वास कैसे बढ़ायें:-

पता है कि बच्चे की आवश्यकता क्या है। उस अनुसार उसको वो चीज स्वतः ही देते जाते हैं। उसे माँगने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है। बच्चा इस क्लास में आया तो उसको इतनी चीजें लगेगी। अपने आप माँ-बाप बाजार में जाकर वो चीजें ले आते हैं और बच्चा निश्चिंत रहता है। इसी प्रकार आत्मायें भी जितना अनन्य भाव से, हृदय से उस परमात्मा के दिव्य स्वरूप को याद करते हैं तो उनकी आवश्यकताओं को भगवान स्वयं पूरा करते हैं। यहां तक की

स्वरूप का ज्ञान तो किसी के पास है नहीं। इसलिए कोई देवताओं को पूजने के लिए कहते हैं, तो कोई पित्रों को पूजने के लिए कहते हैं और कोई तंत्र-मंत्र-जंत्र के आधार पर भूत-प्रेतों को पूजने को कहते हैं। उनकी गति को भगवान ने स्पष्ट किया कि जो देवताओं को पूजते हैं वो उसी घराने में जाते हैं। जो पित्रों को पूजते हैं वो उन्हीं के पास जाते हैं, जो भूत-प्रेत की उपासना करते हैं, वो उन्हीं के पास जाते हैं।

हे अर्जुन! जो कोई फल-फूल या श्रद्धा से जो कुछ भी देता है उसे मैं स्वीकार करता हूँ। अतः अर्जुन तू जो कुछ आराधना करता है, वह मुझे समर्पित कर। जब सर्वस्व त्याग हो जायेगा तब योग से युक्त हुआ तू कर्मों के बंधन से मुक्त होता जायेगा। इसलिए समर्पण भाव



गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

उनकी रक्षा भी करते हैं। इसलिए तो परमात्मा को परम रक्षक और सर्वशक्तिवान भी कहा गया है। हरेक व्यक्ति को ये अनुभव होगा कि भगवान ने विपत्ति के समय किस प्रकार उनकी रक्षा की। इसका आपने अपने जीवन में अनुभव भी किया होगा। फिर भगवान कहते हैं कि जो मेरे वास्वविक स्वरूप को ज्ञान के आधार से नहीं जानते हैं अर्थात् अज्ञानता पूर्वक मुझे देवताओं के रूप में याद करते हैं, श्रद्धा पूर्वक उनको पूजते हैं, वह देवताओं के बीच जन्म लेते हैं। जो पित्रों को पूजते हैं वो पित्रों के पास जाते हैं। जो भूत-प्रेत की उपासना करते हैं, वह उन्हीं के बीच में जाते हैं। आजकल की दुनिया में अंधश्रद्धा वश कोई हमें किसी की तो कोई किसी की पूजा करने की सलाह देता है। क्योंकि भगवान

बुद्धि के समर्पण की बात है, कोई शरीर से समर्पण होने की बात नहीं है। किसी व्यक्ति ने सब कुछ त्याग दिया हो और उसकी मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं आया हो तो उसे समर्पण भाव कहा नहीं जाता है। इसलिए समर्पण भाव की जो बात कही गई है वह अंदर हृदय से समर्पण की बात है। इस अध्याय के अंत में बहुत सुंदर बात कही गई है कि दुनिया के सब प्राणी के प्रति मेरा सम भाव है। भगवान कभी किसी के लिए पक्षपात नहीं करते हैं। जो मेरी अनन्य भाव से सेवा करता है, वही मेरा मित्र है। भगवान को दोस्त तो बनाकर देखो कि कितना सुंदर अनुभव होता है। भक्ति मार्ग में भी जिन्होंने जो सम्बन्ध ईश्वर के साथ जोड़ा है। उन्हींने उस सम्बन्ध का सुख अनुभव किया है। चाहे वो सुदामा का हो, चाहे वो अर्जुन का हो।

जायेगा क्योंकि योग में एकाग्रता की शक्ति द्वारा हमारी आंतरिक शक्तियों को विकास होता है, पाप-कर्मों के बोझ से आत्मा हल्की हो जाती है और आत्म-अनुभूतियाँ बढ़ती जाती है।

- असफलता मिलने पर जल्दी से हिम्मत हारकर, उमंग-उत्साह खोकर न बैठ जायें बल्कि 'मैं हूँ ही विजयी रत्न' इस स्मृति स्वरूप से निरंतर श्रम करते रहें।

- विपरीत वातावरण, वायुमंडल में या व्यक्तियों से माया का वार होने पर दिलशिकस्त न हों। यह संकल्प न उठे 'मैं तो सचमुच हूँ ही ऐसा', 'मेरे में शक्ति नहीं' आदि। यह याद रहे कि इस पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग पर मेरा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है। मेरा अपना हो गया। हरेक आत्मा का भाग्य अपना-अपना है। कोई भी किसी का भाग्य छीन नहीं सकता है।



आणंद। 'गुजरात सद्भावना मिशन' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.गीता।



बांदा। जिला कारागार में राजयोग कक्ष का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं जेल अधीक्षक संजीव कुमार, डिप्टी जेलर रत्नाकर, ब्र.कु.गीता एवं ब्र.कु.शालिनी।



पल्लवपुरम् (मेरठ)। 'शिवरात्रि महोत्सव' पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मनोज चौधरी तथा मंचासीन हैं वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रेम सिंह, बिग्रेडियर आर.एल.वर्मा, ब्र.कु.ऊषा एवं ब्र.कु.श्वेता।



संगमनेर (ताजणमला)। नगराध्यक्ष दिलीप पुंड को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अनिता।



कांकेर (छ.ग.)। 'व्यसन मुक्त चित्र प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए महिला बाल विकास व समाज कल्याण मंत्री लता उसेन्दी तथा सांसद सोहन पोटाई साथ में हैं विधायिका सुमित्रा मारकोले एवं ब्र.कु.रामा।



पानीपत। 'शिवरात्रि महोत्सव' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्वामी चक्रपाणि, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.भूषण तथा अन्य।